**प्रेस विज्ञप्ति** **दिनाँक : 12-02-2006**

## शबरीकुंभ :

## धर्मसभा में अवैध मतांतरण के बारे में पारित प्रस्ताव

भारत एक धर्म प्राण एवं सभी धर्मों का समादर करनेवाला दुनियाँ का एकमेव राष्ट्र है । जिसने विश्व के सभी धर्मावलंबियों को शरण दी । हमारी यही सहिष्णुता आज अपने राष्ट्र के लिये विनाशक बन गई है । भारतीय संविधान का अनुच्छेद 25 अपने नागरिकों को अंतःकरण की स्वतंत्रता और धर्म के अबाधरूप से मानने, आचरण और प्रचार करने का समान अधिकार देता है । उच्चतम न्यायालय ने अनेक बार अपने निर्णयों में यह स्पष्ट किया है । यह अनुच्छेद धोखे, दबाब एवम् लालच द्वारा धर्मांतरण की अनुमति नहीं देता और न ही किसी अन्य का धर्मांतरण करना मूल अधिकार है। धर्मांतरण के बाद व्यक्ति की मानसिकता ही बदल जाती है । उसमें अपने पूर्वजों, परंपराओं और आस्थाओं के प्रति अनादर की भावना भर दी जाती है। जिसका परिणाम अलगाव वाद के रूप में होता है।

हाल ही में प्रकाशित 2001 की जनगणना के आंकडे आँखे खोलनेवाले हैं । मुस्लिम समुदाय की जनसंख्या वृद्धि का प्रतिशत 32.9 तक पहुँच गया है और ईसाइयों की वृद्धि 22.1 प्रतिशत है । इसकी तुलना में हिन्दुओं की संख्या में वृद्धि दर गिरकर 20% रह गई हैं।

समुद्र पारीय इस सांस्कृतिक आक्रमण के फल स्वरूप 18% जनजातीय लोगों को अपने सनातन धर्म से अलग किया जा चुका है। जबकि 1951 में यह संख्या इससे आधी थी।

इन्डोनेशिया के पूर्वी तिमोर प्रान्त में लोगों को बहुत बड़ी संस्था में ईसाई बनाकर वहाँ एक अलग ही संप्रभुता संपन्न राष्ट्र का निर्माण किया गया है। भारत को इस तरह की घटनाओं से शिक्षा लेनी चाहिए।

धर्म सभा की यह माँग है कि केन्द्र सरकार व्यापक, राष्ट्र हित और देश की आंतरिक एवम् बाह्य सुरक्षा को दृष्टि में रखते हुये अनुसूचित जाति और जनजातियों के परंपरागत धर्म, संस्कृति और उनके अस्तित्व की रक्षा के लिये अवैध धर्मांतरणों को प्रतिबंधित करने के लिये कठोर कानून बनाये।

यह धर्म सभा उच्चतम न्यायालय के निर्णय क्र. 240/1997 दिनांक 28-1-2004 का भी स्वागत करती है जिसमें स्पष्ट रूप से कहा गया है।'' धर्म बदलने के साथ यदि जन जाति समुदाय का कोई व्यक्ति अपनी परंपराओं रीति-रिवाजों, संस्कारों को छोड़ देता है तो वह जन जाति का नहीं माना जायेगा। धर्मसभा सभी सनातन धर्मियों एवं उनके सामाजिक-सांस्कृतिक संगठनों, परंपरागत एवं संवैधानिक संस्थाओं, उनके सामाजिक नेताओं एवं युवकों का भी आह्वान करती है कि वे इन षड्यंत्रों को समझें और उन राष्ट्र विरोधियों के विरुद्ध संगठित होकर खड़े हों तो भारतीयों, विशेष कर जन जातीय समुदायों को धर्मांतरित कर उन्हें विभाजित एवं विनिष्ट करने के घृणित कार्य में लगे हैं।

**कृष्णपालसिंह भदौरिया**
**संपादक**
**विश्व संवाद केन्द्र - गुजरात**
**Phone No. : (079) 26579301, Fax. No. : (079) 26579220**
**E-mail : vskguj@icenet.co.in, info@vskgujarat.com**
**Website : www.vskgujarat.com**